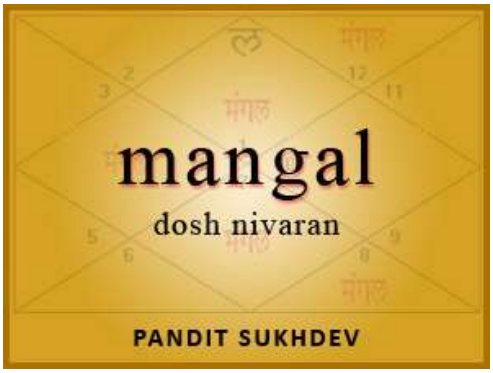

Mangalik Dosh/ मांगलिक दोष या Mangal (Bhom) Dosh/ मंगल (भौम) दोष

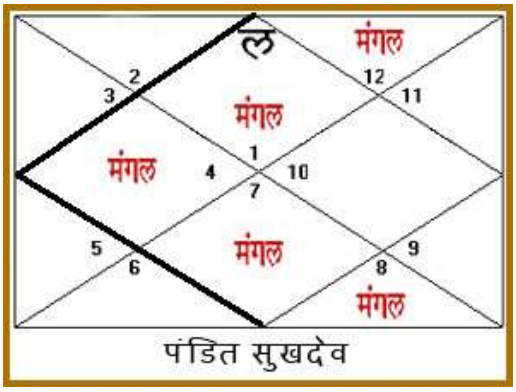

वर और वधु के जन्म नक्षत्र या जन्म नाम के आधार पर गुण मिलान करके, एक सुखी दाम्पत्य जीवन मान लेना, अपने आप में तर्क की कसौटी पर न्यायोचित नजर नही आता, क्योंकि एक सहज विधि से उचित गुण मिलान के बाद भी दाम्पत्य जीवन में अनेकों अड़चनें और विच्छेद देखनें को मिलतें हैं। मेरी समझ से उचित गुण मिलान के साथ मांगलिक (मंगल दोष) और अमांगलिक पर स्थिति स्पष्ट होनी चाहिए, क्योंकि कोई भी एक ग्रह, एक योग, एक दशा और एक ग्रह का गोचर आदि, आपको पूर्णरूप से सुखी या दुखी नही बना सकता, जब तक अन्य प्रकार के योगों, स्थितियों आदि का सहयोग न मिलें। यही बात मंगल दोष या कुज दोष के विषय में भी तर्क की कसौटी पर न्यायोचित साबित होती है। मंगल ग्रह की दीप्तादि अवस्थाओं और उच्च, मूल त्रिकोण, स्वगृही, अधिमित्र, मित्र, सम, शत्रु, अधिशत्रु और नीच राशि में बैंठने से उसकी शुभता और अशुभता प्रभावित होती है, साथ ही मंगल के फल देनें की क्षमता भी अलग-अलग होती है, इसलिए अनेकों प्रमाणिक ज्योतिष ग्रन्थों में मंगल आदि सभी ग्रहों के दोष संख्या के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है और जिसे लग्न के साथ चन्द्र लग्न और शुक्र लग्न से देखनें के बाद, वर और वधु के दोष संख्या के अन्तर के आधार पर मंगल दोष की स्वीकृति या अस्वीकृति दी गई है, इसलिए केवल मांगलिक या मंगली कह देनें से ही मंगल की शुभता और अशुभता की स्वीकृति या अस्वीकृति नही करनी चाहिए, बल्कि उपलब्ध या प्राप्त जानकारी पर पूर्ण चर्चा या विश्लेषण हो। आइये देखें कि दाम्पत्य जीवन में मंगल ग्रह की भूमिका क्यों और कैसे विचार्णीय है।

प्रश्नः- मांगलिक दोष के लिए "मंगल ग्रह" को ही क्यों चुना गया है?

उत्तरः- विवाह संस्कार या दाम्पत्य जीवन प्रेम, स्नेह, विश्वास, सामंजस्य और भावनात्मक सुखो का संबंध है, जबकि ज्योतिष शास्त्र में मंगल अग्नि तत्व ग्रह है, क्रोधी, अति क्रूर, बहुत जल्दबाजी करने वाला, उत्तेजित होने वाला, युवा वर्ग, ऊर्जा, जोश, उत्साह, निर्भीकता, उग्रता, आवेशात्मक, चिड़चिड़ापन, अधिक ईर्ष्या, तामसिकता आदि का कारक है या प्रतिनिधित्व करने वाला ग्रह है, इसलिए दाम्पत्य जीवन के निर्वाह के प्रसंग में इसकी उपस्थिति एक बाधक का काम करती है, इसलिए मंगल ग्रह या मांगलिक दोष पर विचार किया जाता है। यदि मंगल ग्रह का संबंध किसी भी प्रकार आपकी जन्म कुण्डली के द्वितीय भाव यानि कुटुम्ब स्थान और सप्तम भाव यानि जीवन साथी के साथ हो जाए तो स्वभाविक है, कि मंगल ग्रह पर विवाह से पहले विचार कर लिया जाए।

मंगल ग्रह और दाम्पत्य जीवन के संबंध में अनेकों ग्रंथों में अनेकों प्रकार के श्लोक आदि मिलतें है जैसेः-

1. **"लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः।।"** (मुहूर्त संग्रहदर्पण)

अर्थातः- जिस कन्या की कुण्डली में 1,4,7,8 या 12वें भाव में मंगल हो वह कन्या अपने पति के लिए कष्टकारी होती है। इसी प्रकार वर भी कन्या के लिए कष्ट कारक हो सकता है।

2. **"लग्ने व्यये सुखे वाऽपि सप्तमे वाऽष्टमे कुजे। शुभ दृगयोग हीने च पतिं हन्ति न संशय।।"** (पाराशर होरा शास्त्र)

अर्थातः- लग्न, द्वादश, चतुर्थ सप्तम या अष्टम भाव में स्थित मंगल यदि किसी शुभ ग्रह से संबंध न करे, तो स्त्री के विधवा होनें की संभावना होती है, इसी प्रकार पुरूष के लिए भी समझना चाहिए।

3. **"तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्। विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।"** (मुहूर्त चिंतामणी)

अर्थातः- मंगल यदि 1,2,4,7,8,11 और 12 भाव में हो तो दाम्पत्य जीवन के लिए कष्ट कारक होता है, परंतु मंगल मूलत्रिकोण राशि, उच्च राशि, स्वराशि और मित्र राशि का हो तो कष्ट कारक नही होता।

प्रश्नः- लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, एकादश और द्वादश भाव से ही मांगलिक विचार क्यों किया जाता है?

उत्तरः- जिस भाव में ग्रह है उस भाव के फल वही ग्रह देगा, यदि कोई ग्रह नही है, तो भाव पर दृष्टि रखने वाला ग्रह फल देगा, और यदि किसी ग्रह की दृष्टि भी नही है, तो भाव का स्वामी उस भाव के फल देगा, यदि तीनों का संबंध ग्रह और भाव के बीच है, तो तीनों मिलकर अपने - अपने बल अनुसार भाव के फल देंगें। इसलिए मांगलिक होना या न होना भी इन्ही तीनों बातों पर निर्भर करता है, कि ग्रह किस भाव पर बैठा है, किस भाव पर दृष्टि रखता है और किस भाव का स्वामी है। **प्रथम भाव का मंगल** सप्तम दृष्टि से, **द्वितीय भाव का मंगल** द्वितीय भाव पर बैंठकर, **चतुर्थ भाव का मंगल** चतुर्थ दृष्टि से, **सप्तम भाव का मंगल** सप्तम भाव पर बैठकर और अष्टम दृष्टि से, **अष्टम भाव का मंगल** सप्तम दृष्टि से, **एकादश भाव का मंगल** चतुर्थ दृष्टि से और **द्वादश भाव का मंगल** अपनी अष्टम दृष्टि से, दूसरे भाव यानि कुटुम्ब स्थान और सप्तम भाव यानि पति-पत्नि स्थान के साथ संबंध स्थापित करके दाम्पत्य जीवन पर अपनी क्रूरता और उग्रता आदि की मोहर लगाकर, जातक के विवाह जैसे फैसले पर अपनी उपस्थिति दर्ज करता है। इसी कारण लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, एकादश और द्वादश भाव में स्थित मंगल ग्रह को कष्टकारी या मांगलिक दोष की संज्ञा दी गई है।

आओ देखें कि मंगल ग्रह को 1,2,4,7,8,11 और 12वें भावों में ही दाम्पत्य जीवन के लिए कष्टकारी क्यों कहा गया है और साथ ही उन्ही भावों में किन स्थितियों में वह कष्टकारी नही होता। मंगल की स्थिति और दृष्टि से प्रभावित होंने वाले भाव या घर जो निम्न प्रकार से हैं।

भाव या घर में मंगल	मंगल की स्थिति विचार	मंगल की चौथी दृष्टि	मंगल की सप्तम दृष्टि	मंगल की अष्टम दृष्टि	परिणाम
1	देह	सुख	दाम्पत्य जीवन	आयु	प्रभावित करता है
2	कुटुम्ब	संतान	आयु	भाग्य	प्रभावित करता है
3	पराक्रम	रोग	भाग्य	कर्म	प्रभावित नही करता है
4	सुख	दाम्पत्य जीवन	कर्म	लाभ	प्रभावित करता है

5	संतान	आयु	लाभ	व्यय	प्रभावित नही करता है
6	रोग	भाग्य	व्यय	देह	प्रभावित नही करता है
7	दाम्पत्य जीवन	कर्म	देह	कुटुम्ब	सबसे अधिक प्रभावित करता है
8	आयु	लाभ	कुटुम्ब	पराक्रम	प्रभावित करता है
9	भाग्य	व्यय	पराक्रम	सुख	प्रभावित नही करता है
10	कर्म	देह	सुख	संतान	प्रभावित नही करता है
11	लाभ	कुटुम्ब	संतान	रोग	सबसे कम प्रभावित करता है
12	व्यय	पराक्रम	रोग	दाम्पत्य जीवन	प्रभावित करता है

"जातक तत्व" नामक ज्योतिष शास्त्र की एक महत्वपूर्ण पुस्तक के चतुर्थ अध्याय में एक श्लोक इस प्रकार से है **"लग्नतुर्याष्टमान्त्यमदान्यदमे सपापारेपतित्यागान्परासक्ता"** अर्थातः- किसी स्त्री के लग्न, चतुर्थ, अष्टम, सप्तम या द्वादश भाव में मंगल ग्रह के साथ यदि पापी ग्रह भी हो तो, स्त्री का पति उसे त्याग देगा। यहां पर मंगल ग्रह के साथ एक अन्य पापी ग्रह के बारे में बताया गया है, इसका अर्थ है कि अकेला मंगल ग्रह हानिकारक नही है। मंगली या मंगल दोष होनें के साथ एक अन्य पापी ग्रह का भी संबंध मंगल ग्रह के साथ हो तो अरिष्ट की संभावना है। चाहे मंगल ग्रह हो या कोई अन्य ग्रह उसके पूर्ण अशुभ फल तभी मिलेंगे जब शुभ प्रभावों का सर्वथा अभाव हो और इसके विपरीत शुभ फलों को भी समझना चाहिए। मेरा अनुभव रहा है, कि यदि सप्तम भाव, सप्तमेश और विवाह का कारक ग्रह शुक्र तीनों ही जन्म कुण्डली और नवांश कुण्डली में एक साथ मंगल से पीड़ित हों और कोई शुभ ग्रहों का संबंध न हो तो परिणाम गंभीर होतें है। आओ एक अन्य श्लोक पर दृष्टि गोचर करें, **"उक्तस्थानेषु चन्द्राच्य गणयत पाप खेचरान्। पापाधिक्ये वरे श्रेष्ठं विवाहं प्रवदेद् बुधः।।"** अर्थातः- यदि वर के पाप ग्रहों (सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु) की संख्या (लग्न कुण्डली और चन्द्र कुण्डली के 1,2,4,7,8,12 भावों में) वधु के पाप ग्रहों (सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु) की संख्या (लग्न कुण्डली और चन्द्र कुण्डली के 1,2,4,7,8,12 भावों में) से अधिक हो तो विवाह मान्य होना चाहिए। इसलिए मंगल दोष को समझ लेना या उपायों को प्रयोग में लाना ज्यादा उचित है, के बजाए मंगल दोष की वजह से या मंगलिक दोष के नाम पर शुभ और मांगलिक अवसरों को खोना क्योंकि **"अज्ञान ही भय का कारण है, और ज्ञान ही उस भय का निवारण है"।** यहां वैदिक ज्योतिषशास्त्र हमारे जीवन में होनें वाले कष्टों, परेशानियों आदि को दूर करके जीवन को आनन्दमयी और सुखी करने के लिए है, न कि भ्रमित, परेशान और दुखी करने के लिए।

ज्योतिषशास्त्र में मंगल दोष का परिहार या मंगल दोष के समाप्त होने के लिए कुछ श्लोक इस प्रकार से हैः-

1. **"व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोर विना। द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोर विना ।।"**

   अर्थात :- व्यय भाव में मंगल यदि बुध तथा शुक्र की राशि में स्थित हो तो मंगल दोष नही होता है।

2. **"अजे लग्ने व्यये चापे पाताले बृश्चिके स्थिते। वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।"**

अर्थातः- मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनु राशि, चतुर्थ में बृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि और अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हों, तो मंगल दोष नही होता है।

3. **"द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते"** (मुहूर्त चिंतामणी)

अर्थातः- मीन राशि का मंगल सप्तम भाव में तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम भाव में हो तो भौम दोष नही होता है।

4. **"अजे लग्ने व्यये चापे पाताले बृश्चिके कुजे। द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते।।"** (मुहूर्त पारिजात)

अर्थातः- लग्न में मेष राशि का मंगल, चौथे भाव में बृश्चिक राशि का मंगल, सप्तम भाव में मकर राशि का मंगल, अष्टम भाव में कर्क राशि का मंगल, बारहवें भाव में धनु राशि का मंगल हो तो मंगल दोष नही होता।

उपरोक्त श्लोकों से पता चलता है, कि किसी विशेष भाव में मंगल दाम्पत्य जीवन के लिए कष्ट कारक है, पर साथ ही यह भी बताया गया है, कि उन्हीं भावों में एक विशेष स्थिति में मंगल कष्टकारक नही है या मंगल दोष नही होता है।

पाराशर ऋषि के योग कारकाध्याय के अनुसार सभी अलग-अलग लग्न कुण्डलियों में मंगल का अलग-अलग भावों का स्वामी होना और बैठना भी मंगल के शुभ और अशुभ होने को पूरी तरह प्रभावित करता है, जैसे सिंह लग्न की कुण्ड़ली में मंगल चतुर्थेश और नवमेश होकर यदि लग्न, चतुर्थ या सप्तम भाव में हो तो मंगली होने के साथ मंगल ग्रह राज योग कारक भी बनता है। केवल देखना यह है कि राज योग भंग (रद्द) न हो रहा हो। अलग-अलग बारह लग्न कुण्ड़लियां भी मंगल के क्रूर स्वभाव को प्रभावित करती है, आओ अब मंगल के स्वामित्व पर भी दृष्टि गोचर करें, जो निम्न प्रकार से है।

लग्न	मेष (प्रथम राशि)	बृश्चिक (दूसरी राशि)	मंगल का परिणाम (फल)
मेष	लग्नेश	अष्टमेश	शुभ
वृष	द्वादशेश	सप्तमेश	अशुभ
मिथुन	एकादशेश	षष्ठेश	अशुभ
कर्क	दशमेश	पंचमेश	शुभ
सिंह	नवमेश	चतुर्थेश	शुभ
कन्या	अष्टमेश	तृतीयेश	अशुभ
तुला	सप्तमेश	द्वितीयेश	अशुभ
बृश्चिक	षष्ठेश	लग्नेश	सम
धनु	पंचमेश	द्वादशेश	शुभ
मकर	चतुर्थेश	एकादशेश	अशुभ
कुम्भ	तृतीयेश	दशमेश	अशुभ
मीन	द्वितीयेश	नवमेश	शुभ

मंगल की स्थिति और स्वामित्व के अलावा निम्न विशेष स्थितियों में भी मांगलिक दोष का समाप्त होना या न के बराबर होना माना जाता है,

1. **"राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते।।"** (मुहूर्त दीपक), अर्थातः- राशि मैत्री, एक ही गण तथा 27 अथवा अधिक गुण मिलें, तो मंगल दोष विचार नही करना चाहिए।

2. **"सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे। वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुज दोषः।।** (मुहूर्त दीपक), अर्थातः- बलवान (स्वराशि, मित्र राशि, मूलत्रिकोण राशि, उच्च्व राशि) गुरू या शुक्र सप्तम या लग्न भाव में हों, साथ ही मंगल नीच, अस्त, वक्री और निर्बल आदि हो, तो मंगल दोष रद्द हो जाता है।

3. **"केन्द्रकोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः। तदा भौमस्यदोषो न मदने मदपस्तथा।।"** (मुहूर्त चिंतामणी)

   अर्थातः- कुण्डली के केन्द्रों तथा त्रिकोणों में शुभ ग्रह एवं त्रिषड्या भावों में पाप ग्रह बैठें हों तथा सप्तमेश सप्तम में ही हो, तो भौम दोष नही लगता।

4. **"शनि भौमो अथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव भौम दोष विनाशकृत।।"** (फलित संग्रह) अर्थातः- मांगलिक जातक जिस भाव से मांगलिक हो और दूसरा जातक मांगलिक न हो, पर उसी भाव में कोई क्रूर या पाप ग्रह (सूर्य, राहु, मंगल या शनि) हों तो मांगलिक दोष रद्द (समाप्त) हो जाता है।

5. **"सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता। तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृतः।।"** अर्थातः- सप्तम मंगल पर गुरू की दृष्टि, मंगल दोष को समाप्त कर देती है।

6. **"कुज जीवो समायुक्तो युक्तो व कुज चन्द्रमा। न मंगली मंगल राहु योग।।"** अर्थातः- मंगल-गुरू, मंगल-राहु और मंगल-चन्द्र साथ हों, तो मंगल दोष भंग हो जाता है।

7. **"त्रिषट् एकादशे राहु त्रिषट् एकादशे शनिः। त्रिषट् एकादशे भौमः, सर्व दोष विनाशकृत्।।"** अर्थातः- एक जातक यदि मंगली है और दूसरे जातक के जन्म लग्न पत्रिका के 3,6 व 11वें भावों में राहु हो या शनि हो या मंगल हो, तो मंगल दोष रद्द हो जाता है।

8. **"गुरौ केन्द्र त्रिकोणे वा लाभस्थाने यदा शनि। रिपु स्थाने यदा राहु मंगली दोष नाश कृत।।"** अर्थातः- केन्द्र अथवा त्रिकोण में गुरू हो, या लाभ (एकादश) भाव में शनि, अथवा रिपु (षष्ठ) भाव में राहु हो, तो मंगल दोष का नाश माना जाता है।

9. **"कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्।।"** अर्थातः- मांगलिक कन्या का विवाह मांगलिक वर के साथ हो तो, मांगलिक दोष नही होता और मंगल ग्रह दामपत्य सुख को बढ़ाता है।

10. **"न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा। न मंगली केन्द्रगते च राहुः न मंगली मंगल-राहु योगे।।"** (मुहूर्त्त दीपक), अर्थातः- दूसरे भाव में चन्द्र-शुक्र साथ हों या मंगल ग्रह गुरू के द्वारा दृष्ट हो, राहु केन्द्र में हो अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नही लगता है।

उपर्युक्त जानकारी से पता चलता है कि मंगल दोष का परिहार या मंगल दोष के समाप्त होने के अनेकों शास्त्रोक्त नियम है, जिनमें मंगल दोष का परिहार या मंगल दोष का समाप्त होने के मुख्यतः दो दृष्टिकोणों से हो सकता है, पहला मंगली जातक की पत्रिका में ही मंगल दोष भंग या रद्द हो जाए, दूसरा दोनों ही जातक मंगली हों, यदि संभव हो तो मंगली जातक का विवाह मंगली जातक से ही करना उचित है, यदि ये संभव न हो सके तो, अलग- अलग भावों में मंगल दोष का परिहार भी अलग-अलग प्रकार के उपायों से संभव है। स्त्री और पुरूष के लिए अलग-अलग परिहार हैं, जो निम्न प्रकार से हैं, जबकि मेरा मानना हैं, कि यदि आपकी जन्म पत्रिका में मंगल दोष सिद्ध हो ही गया हो और रद्द न हो रहा हो तो भी विवाह में विलम्ब आदि से बचने के लिए और वैवाहिक जीवन में सुख, शांति और समृद्धि आदि लाने या बढ़ाने के लिए निम्न में से कुछ या कोई एक उपाय श्रद्धा और विश्वास से कर लिया जाए तो शुभ फलदायी होगा, क्योंकि सभी प्रकार के उपाय आदि, अपने द्वारा किए हुए पाप कर्मो के लिए ईश्वर से क्षमा याचन करने के लिए होतें है और हमारे पाप कर्मो के फलों को नष्ट या न के बराबर करतें है। ये निम्न प्रकार के है।

1. एक नियमित संख्या में केले के वृक्षों को लगाना।
2. विवाह से पहले कुम्भ विवाह, तुलसी विवाह, पीपल विवाह या विष्णु विवाह आदि करना।
3. विधी विधान से मंगला गौरी की पूजा या वट सावित्री व्रत आदि करना।
4. मंगल के निम्न 21 नामों का एक विशेष दिन अनुष्ठान, जाप आदि करवाना। **ऊँ कुजाय नमः, ऊँ रक्ताय नमः, ऊँ मंगलाय नमः, ऊँ भूमि पुत्राय नमः, ऊँ सुहागानां कृपा कराय नमः, ऊँ धरात्मजाय नमः, ऊँ ऋण हर्वे नमः, ऊँ धनदाय नमः, ऊँ लोहिताय नमः, ऊँ लोहितगाय नमः, ऊँ सिद्ध मंगलाय नमः, ऊँ महाकाय नमः, ऊँ सर्वकर्म विरोधकाय नमः, ऊँ वाराह पुत्राय नमः, ऊँ भूमिदाय नमः, ऊँ अंगारकाय नमः, ऊँ यमाय नमः, ऊँ सर्व रोग्य प्रहारिण नमः, ऊँ सृष्टिकर्त्रे नमः, ऊँ प्रहर्त्रे नमः, ऊँ सर्व काम फलदाय नमः।**
5. मंगल यंत्र की विशेष पूजा नियमित रूप से करें।
6. भगवान शिव के पुत्र **"कार्तिकेय भगवान",** मंगल ग्रह के देवता हैं, इसलिए कार्तिकेय भगवान की पूजा, अनुष्ठान आदि, मंगल दोष के परिहार के लिए विशेष फलदायक है।
7. मंगल गायत्री का नियमित जाप **करें।**

"ऊँ अंगारकाय विद्महे
शक्तिहस्ताये धीमहि।
तन्नौः भौमः प्रचोदयात्।।"

मांगलिक या मंगल दोष को लेकर आज समाज में अनेकों प्रकार के प्रश्न या भ्रांतियां फैली हुई है जैसेः-

प्रश्नः- क्या दूसरे भाव से भी मांगलिक विचार करना चाहिए?

उत्तरः- हां, क्योंकि दूसरा भाव कुटुम्ब स्थान है, इसलिए मांगलिक विचार करने पर कोई हरज नही है।

प्रश्नः- क्या जन्म लग्न के अलावा चन्द्रमा और शुक्र से भी मंगल दोष पर विचार करना चाहिए?

उत्तरः- हां, क्योंकि लग्न शरीर है, चन्द्रमा मन और शुक्र काम का प्रतिनिधित्व करता है। जिसमें मंगल दोष का प्रभाव लग्न से 100%, चन्द्रमा से 75% और शुक्र से 50% माना जाता है।

प्रश्नः- क्या मंगल दोष हल्का, आंशिक, शुरूवाती या अंतिम चरण का होता है?

उत्तरः- नही, यदि आपकी जन्म पत्रिका में मंगल दोष है, तो है, और नही है, तो नही है।

प्रश्नः- क्या मांगलिक होना एक अभिशाप है?

उत्तरः- नही, मंगल ग्रह तो आपके किये कर्मो का केवल एक सूचक है, अभिशाप नही।

प्रश्नः- क्या मंगली जातक का विवाह केवल मंगली जातक के साथ ही होना चाहिए?

उत्तरः- नही, ऐसा नही है, कुछ विशेष ग्रहों की विशेष स्थिति पर या परिहार के बाद अमंगली जातक का विवाह मंगली जातक के साथ किए जा सकता है।

प्रश्नः- द्विगुना मंगली या त्रिगुणा मंगली या भौम पंचक क्या है ?

उत्तरः- कुछ विशेष भावों में मंगल ग्रह यदि कुछ पापी ग्रहों के साथ हो तो उसकी क्रूरता को बढ़ातें हैं, यदि मंगल के साथ एक क्रूर ग्रह और हो तो द्विगुना मंगली, दो क्रूर ग्रह और हों तो, त्रिगुणा मंगली और यदि चार ग्रह और हों तो, भौंम पंचक कहा गया है।

इसी प्रकार आपके भी प्रश्न हो सकते हैं, कुछ प्रश्न आपकी सुविधा के लिए दियें जा रहे हैं जैसेः-

क्या मुझे मांगलिक जातक से ही विवाह करना चाहिए? (Shall I marriage a Manglik person?)

क्या मैं लग्न, चन्द्रमा और शुक्र से मंगली हूं? (Is am I Manglik from ascendant, moon and venus?)

क्या एक निश्चित समय के बाद मंगल दोष समाप्त हो जाता है? (Does Mangal Dosh finish after a certain period?)

मेरे लिए मंगल दोष का परिहार क्या है? (What are the remedies for my Mangal Dosh?)

etc.